19–5–67 ओमशांति प्रातःक्लास

बाप बच्चों को समझाते हैं कि यहां पर जब बच्चों को याद में बिठाते हैं तो इस बात को कोई मनुष्य नहीं समझते हैं। बच्चे ही समझते हैं कि इस याद की यात्रा से ही हम मुक्तिधाम को जा पहुंचेंगे। बाप एक2 युक्ति जो बताते हैं वो नई है। नई दुनियां के लिए नई युक्ति। बच्चे जानते हैं कि बाप याद की यात्रा सिखाते हैं। जिससे जो भी पाप हैं वो सब मिट जाते हैं। एवर हेल्दी सदैव निरोगी काया बननी है। निरोगी काया निरोगी राज्य प्राप्त करने लिए बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हैं। अपने2 सेन्टर्स पर भी यह पुरुषार्थ करते हैं। बाप से कोई भी चीज सहज मिलती है। बाप को तो बच्चों पर लव होता है। यह बेहद का (बाप) है ही बेहद का सुख देने वाला। तुम बच्चे जानते हो हम बाबा को याद करते2 शांतिधाम में जाकर फिर सुखधाम में जाकर पहुंचते हैं। भक्ति की भेंट में यह कितना सहज है। बच्चे जानते हैं कि स्वराज्य की स्थापना तो होनी ही है। विनाश भी होना ही है। बच्चों को अंदर में खुशी रहती है सिर्फ बाप को याद करने से। बच्चों को यह एक ही सब्जेक्ट है बाप को याद करने की। और कोई सब्जेक्ट नहीं देते हैं। सयाने बच्चे जो होते हैं उनको कमाई का ओना रहता है। भल दिन–रात अपना धंधा–धोरी करते हैं ;परंतु उस कमाई और इस कमाई में फर्क बहुत है। जांच करनी है कि हमारी कमाई जास्ती किसमें है। उस पाई–पैसे की कमाई में जास्ती समय देना है कि बाप की याद में जास्ती देना है?बाप तो बच्चों की बुद्धि का ताला खोलते हैं। बच्चे सम्मुख बैठे हैं किसके..... ?निश्चय है कि हम बापदादा के सामने बैठे हैं?यह भी कोई नई बात नहीं है। कल्प2 हम बापदादा के पास बैठ नालेज पाकर वर्सा लेते हैं। और कोई मनुष्य इन बातों को नहीं जानते। यह एक ही पढ़ाई है रुहानी बाप की। और कहीं भी रुहानी बाप पढ़ा नहीं सकते हैं। बुद्धि से काम लेना है। कहीं भी कोई संशय हो तो पूछना चाहिए। इसमें मूंझना नहीं चाहिए। यूं तो यह नालेज ऐसी है आप ही सब समझ में आ जाता है। कुछ पूछने की दरकार ही नहीं रहती है। एक तो बुद्धि का योग उपर लगा रहना चाहिए। जिन्न के मुआफिक। जिन्न की कहानी बताते हैं ना। कहता था कि हमको काम नहीं देंगे तो हम खा जावेंगे। बेहद के बाप भी कहते हैं कि हमको याद नहीं करेंगे तो तुमको माया काल खा जावेगा। जास्ती कोई मेहनत नहीं है। बुद्धि में बैठ जाता है कि यह दुनियां खतम होनी है। इससे हम दिल लगाकर क्या करेंगे?तो फिर पुरानी दुनियां से ममत्व मिटता जावेगा। अब बाबा तुमको देखते हैं ,तुम बाबा को देखते हो। बाबा की बुद्धि में है कि अब हम घर जा रहे हैं। फिर राजधानी में आवेंगे। ततत्वम्। तुमको भी यही बुद्धि में रखना है। थोड़ा माया विघ्न डालती है ;परंतु सावधान रहना चाहिए। उंच ते उंच भगवान पढ़ाने वाला है तो जरूर पद भी उंच ते उंच ही पावेंगे। सिर्फ याद की ही यात्रा में रहना है। इसमें बच्चे मूंझते क्यों हैं?जरा भी इसमें मूंझने की दरकार नहीं है। यह भी बाप ने समझाया है तुम्हारे में से कुछ भी नहीं लेता हूँ। मैं तो देने आया हूँ। तुमको सुखधाम का मालिक बनाने आया हूँ। हम ईश्वर को देते हैं यह सोचना भी पाप है ;क्योंकि ईश्वर तो दाता है ना। कोई के भी अंदर में है कि हम देते हैं तो इतना कहने पर ताकत कम हो जाती है। यह भी जानते हो कि शिवबाबा को राजाई आदि कुछ भी नहीं चाहिए। बाबा तो आये ही हैं बच्चों को विश्व का मालिक बनाने। सो भी कल्प2 आते हैं। नई बात नहीं है। कल की ही बात है। कल हम मालिक थे फि चक्र खाया है। अब नाटक पूरा होता है। बाप आये हैं राजयोग सिखाने। ऐसी कोई वस्तु नहीं जो तुमको अटक डाले। बाप की याद में कोई अटक कैसे डाल सकते हैं। इसमें विघ्न कैसे डाल सकते हैं?लौकिक बाप को याद करने में कब विघ्न पड़ेगा क्या?यह भी निश्चय है कि हमको बेहद के बाप की ही मत पर चलना है। वो इस साधारण तन द्वारा सिखा रहे हैं। नहीं तो यह चित्र आदि कहां से आवे?और फिर बनना भी प्रजापिता ब्र.कु.कु. । भगवान नई रचना रचते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा। ब्राह्मण तो तुम्हीं हो। बच्चों को पता है कि हम अब ब्राह्मण कुल के हैं। पहले2 ईश्वरीय कुल के फिर दैवी कुल के बने हैं।

सारा चक्र बुद्धि में है। इतनी सहज बातें फिर भूलनी क्यों चाहिए?याद रहने से ही सदैव खुशी रहेगी। झरमुई–झगमुई में लग जाने से यह बातें भूल जाती हैं। बच्चों को याद की यात्रा में रहने के लिए भी समय मुकर्रर करना चाहिए। भक्ति के लिए भी समय फिक्स करते हैं ना। तुमको भी समय फिक्स करना चाहिए। नौकरी से जब छूटते हैं तो घूमने–फिरने जाते हैं। सवेरे को भी जा सकते हैं। पुरुषों को तो फिर भी धंधे–धोरी का झंझट रहता है। तुम माताओं आदि का तो कोई भी हंगामा आदि नहीं है जिससे कि बुद्धि जावे। तुमको तो घर–बार सम्भालना है। बच्चों को स्कूल भेज दिया फिर बैठ बाप को याद करना है। कभी भी समय मिले तो वेस्ट नहीं करना चाहिए। बाबा कहते रहते हैं कि याद का चार्ट रखो तो बहुत उन्नति होगी। अपना ही कल्याण करना चाहिए। सुना ..अनसुना नहीं करना चाहिए। बाबा समझते हैं कि अपना चार्ट रखने से बच्चों की उन्नति बहुत होगी और खुशी भी होगी। औरों को आप समान बनावेंगे तो भी खुशी होगी। गाया भी जाता है ना हीरे जैसा जन्म अमोलक। दुनियां में धक्का आदि खाते रहेंगे तो गंवा देंगे। इसमें जास्ती गफलत नहीं करनी चाहिए। और बच्चों को अंदर में खुशी बहुत रहनी चाहिए। यह तो बुद्धि में है ना कि मैं यह परीक्षा पास कर रहा हूँ। ततत्वम्। तुम भी यही धंधा कर रहे हो। और फिर क्या चाहिए?परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले परमात्मा की वो मिला फिर बाकी क्या?विश्व की बादशाही मिल जाती है। तुम बच्चों को अभी मिल रही है। इसलिए ही सदैव हर्षित रहना है। तुम्हारे जैसा सौभाग्यशाली और कोई मनुष्य हो नहीं सकता है। बशर्ते (जबकि) श्रीमत पर चलते रहो तो तुम्हारी बहुत उंची तकदीर है। जानते हो कि शिवबाबा हमको राजयोग का इम्तिहान पढ़ा रहे हैं। बच्चों को अंदर में बहुत खुशी रहनी चाहिए। सारे विश्व में तुम्हीं हो जिनको भगवान पढ़ा रहे हैं। मनुष्य जब बीमार पड़ते हैं तो भगवान को याद करते हैं ना। तुम तो खुशचाक हो। बाप याद दिलाते हैं और समझाते हैं मरना तो सबको है ही। अब अपना जीवन याद की यात्रा से हीरे जैसा बना लो। यह बहुत फायदे का कारोबार है। गॉडली स्टुडेंट लाइफ सोर्स ऑफ इन्कम है। बच्चे जानते हैं कि हम स्वर्गवासी विश्व का मालिक बन रहे हैं। अपने को देखते रहो कि हम क्या कर रहे हैं?कहां सुस्ती तो नहीं करते हैं। डिले इज डेंजर। बाप ने पहले समझाया है कि तुमको कितना माल–ठाल दिया। अब तुम्हारे हाथ में क्या है?अब फिर बाप आया है देने के लिए। यह भी जानते हो कि कल्प2 ऐसे ही बाप के सामने हम आकर बैठते हैं। इसमें भक्ति का रिंचक भी निशान नहीं है। टूमच बातें कोई से भी नहीं करो। हमको बाबा पढ़ाते हैं बस कितना सहज है। बाबा कहते हैं कि मुझे याद करो और वर्सा लो। यही है ज्ञान जिससे सदगति होती है। बाकी भक्ति से तो दुर्गति ही होती आई है। इसलिए ही कहा जाता है सेकेंड में जीवनमुक्ति। बच्चों(को)समझाते तो बहुत हैं शिव के भक्तों के पास जाओ। बोलो यह तुम क्या कर रहे हो?जिनकी पूजा कर रहे हो वो हमको पढ़ा रहे हैं। पढ़ाकर गये थे। इसलिए ही अब याद करते हो। अब फिर बाबा कहते हैं कि मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। आत्मा पवित्र हो जावेगी। यह बहुत आसान अक्षर है। सबको आगे चलकर पसंद आवेगा। बुढ़ियों के लिए तो बहुत सहज है। एक अक्षर याद नहीं कर सकते हो वंडर है ना। अपने पति को याद कर सकती। इस बाप ने क्या गुनाह किया है जो कि याद नहीं कर सकते हो?यह तो भला बुद्धि में है ना कि हम स्वर्गवासी बन रहे हैं। कि यह भी भूल जाते हो। बच्चों को समझाया गया है कि आत्मा जब भी शरीर लेती है तो वो ही सुख–दुःख भोगती है। पुनर्जन्म तो होता ही है ना। बच्चों को याद के लिए समय फिक्स करना चाहिए। दैवी गुण भी धारण करने हैं। जबकि बहुत मीठा बनना है। कोई से भी लड़ना–झगड़ना नहीं है। लिखा भी हुआ है 16कला सम्पूर्ण सम्पूर्ण निर्विकारी तो उसमें मीठा बनना भी तो गुण है ना। तो कोई भी उल्टा–सुल्टा काम नहीं करो। हो जावे तो अपना ही कान पकड़ते रहना है। तो सावधानी रहेगी। भक्तिमार्ग में बुढ़िया याद करती होंगी। कृष्ण को ;लेकिन यहां तो कहा जाता है नहीं, बाप को याद करना है। ऊँच ते ऊँच पद पाना है तो याद भी तो उंचे को करना है ना। ओम।